प्रथम भक्ति।
प्रथम वैराग्य।

एक तर्क हैं कि वैराग्य के बिना कोई भक्ति नहीं हो सकती। यह सही लगता है। हम भक्ति का अभ्यास क्यों नहीं कर रहे हैं? सीधा जवाब है कि हमारा मन इस दुनिया में फँसा हुआ हैं। माँ, बाप, भाई, बहन, स्त्री, पति, पैसा, प्रतिष्ठा इत्यादि के लिए कही प्यार कही दुश्मनी कही लोभ आदि भावनाओं से इस दुनिया में लगाव उत्पन्न होता है। इसलिए हमारा दिमाग इस दुनिया के बारे में सोचता रहता है और जाहिर है कि मन भगवान के बारे में नहीं सोच सकता। जब तक मन इस दुनिया से बाहर नही आएगा तब तक भक्ति नही हो सकती। इस प्रकार वैराग्य के बिना भक्ति संभव नहीं है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

दूसरा तर्क हैं कि भक्ति के बिना वैराग्य नहीं हो सकता। यह भी सही लगता है। हमारे पास विरक्ति क्यों नहीं है? क्योंकि हमारा मन अशुद्ध है। मन जितना अधिक अशुद्ध होगा, उतना ही अधिक इस दुनिया के लिए रूचि होगी। वैराग्य का मतलब इस दुनिया के लिए अरूचि होना। इसलिए स्वाभाविक रूप से वैराग्य नही होगा। मन कैसे शुद्ध हो? केवल भक्ति के माध्यम से। भक्ति से मन शुद्ध होगा तो इस दुनिया के लिए अरूचि होगी। इस प्रकार भक्ति के बिना वैराग्य नहीं हो सकता।

प्रथम बीज कि प्रथम पेड़ के इस पहेली को कैसे हल करें? जवाब है कि भक्ति और वैराग्य एक साथ होता है। श्रीकृष्ण ने गीता में सुझाव दिया है, ' अभ्यास के साथ वैराग्य कुंजी है।' अभ्यास ये कि भगवान में मन लगाने के लिए प्रयास करना।

एक तराजू के संतुलन पर विचार करें जो एक तरफ भारी है। एक पलड़े में वजन बहुत अधिक है। एक व्यक्ति भारी पलड़े से कुछ हिस्सा निकाल कर हल्के पलड़े में डाल देता है। भारी पलड़ा उतनी ही हद तक हल्का हो जाता है जितना हद तक हल्का पलड़ा भारी हो जाता है। इस प्रकार डिटेचमेंट को उस हद तक विकसित होती है जिस हद तक मन को भगवान में लगाया है। भक्ति प्रेम है। वैराग्य और ज्ञान भक्ति के पुत्र हैं और इसलिए वे भक्ति करने पर अपने आप हो जाएंगे। कोई अलग प्रयास की जरूरत नहीं है। भक्ति को किसी और चीज से किसी भी समर्थन की आवश्यकता नहीं है। जब प्रकाश प्रवेश करता है, अंधेरा गायब हो जाता है। दोनों घटनाएँ एक साथ होती हैं। उसी तरह, जितनी भक्ति मन में लाया उतना ही भौतिक लगाव खत्म हो गया, मतलब उतना ही वैराग्य हो गया। दोनों एक साथ होते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132